स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के ग्रामों की शैक्षिक एवं आर्थिक दशा

1952 ई. - 2000 ई.

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के ग्रामों की शैक्षिक एवं आर्थिक दशा

1952 ई. - 2000 ई.

डॉ. हितेन्द्र यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
इतिहास विभाग
लाजपत राय महाविद्यालय
(चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
साहिबाबाद, गाजियाबाद
उ. प्र. (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के ग्रामों की शैक्षिक एवं आर्थिक दशा
1952 ई. - 2000 ई.

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-947936-9-4

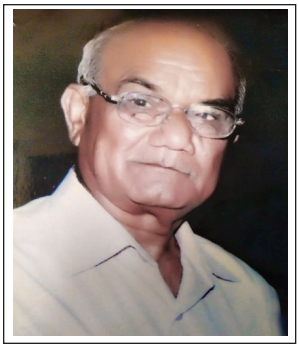
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं SAMPLE



आदरणीय पिताजी
श्री राजवीर सिंह यादव



आदरणीय माताजी
श्रीमती शकुंतला देवी यादव

अपने पूज्य माता-पिता को याद करते हुए

समर्पण

आदर के साथ अपने पूज्य पिता
"राजवीर सिंह यादव"
को
जो मुझे विश्वास और प्रेरणा देते रहे
तथा मानव सेवा के लिए प्रेरित करते रहे।

"जीवन दूसरों के काम आना ही जीवन है।"
- श्री राजवीर सिंह यादव

नमूना · SAMPLE

SAMPLE

प्रस्तावना

भारत एक ग्राम प्रधान एवं कृषि प्रधान देश है। ग्राम भारतीय संस्कृति के आधार एवं भारतीय जनता के परिचायक हैं। ग्राम ही राष्ट्रीय जीवन की आत्मा एवं हृदय है। एक ग्रामीण क्षेत्र वह है जहाँ पर अधिकांशतः लोग कृषि उद्योग में लगे हों अर्थात् वस्तुओं का प्राथमिक उत्पादन प्रकृति के सहयोग से करते हों। देश के अधिकांश ग्राम अभी-भी शिक्षा, चिकित्सा सुविधाओं, पीने के पानी, बिजली, सड़क, ऋण सुविधाओं, सूचना और बाजार व्यवस्था जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। गरीबी का स्रोत ग्रामीण क्षेत्रों में है और यह वहीं व्यापक रूप से फैली है। अतः यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि ग्रामों को समृद्ध किए बिना भारत सम्पन्न नहीं बन सकता।

ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ग्रामों के विकास के लिए कोई वास्तविक प्रयास नहीं किए गये। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से हमारी राष्ट्रीय नीतियाँ ग्रामीण क्षेत्रों के उत्थान एवं विकास की ओर उन्मुख रही हैं। सन् 1952ई. में पंचवर्षीय योजना एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रम के उद्‌भव के साथ ही शासकीय क्रियाकलापों का रुख ग्रामीण क्षेत्रों की ओर मुड़ा, जो कालान्तर में विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में सतत् क्रियाशील रहा है। ग्रामीण निवासियों के निम्न जीवन-स्तर की समस्या को केन्द्र में रखकर ''स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के ग्रामों की शैक्षिक एवं आर्थिक दशा'' 1952 ई.-2000 ई. विषय पर यह पुस्तक लिखी गई है। इस पुस्तक के माध्यम से एक मौलिक प्रयास द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि सन् 1952ई. से 2000ई. के मध्य ग्रामों एवं उनके निवासियों की शैक्षिक एवं आर्थिक दशा की स्थिति एवं उसके स्वरूप में क्या परिवर्तन आया है। चूँकि देश के विभिन्न इलाकों में काफी भिन्नता हैं अतः यहाँ किए गए विश्लेषण और निष्कर्षों

SAMPLE

को मोटे अर्थों में ही लिया जाना चाहिए।

यह अध्ययन साक्षात्कार-अनुसूची पद्धति के द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन ग्रन्थों एवं उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के आधार पर आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के द्वारा भी किया गया है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि आजादी के अर्द्धशतक के बाद भी देश पूर्ण साक्षर नहीं हो पाया है। प्राथमिक स्तर पर लगभग प्रत्येक ग्राम में प्राथमिक एवं अन्य पाठशालाओं में अध्ययन की स्थिति में मात्रात्मकता के साथ गुणात्मक सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। ग्रामों में कृषि अभी-भी परम्परागत प्रणाली एवं ज्ञान के आधार पर की जा रही है। आधुनिक कृषि यंत्रों एवं उपकरणों का प्रयोग बहुत ही न्यून है। ग्रामों में कृषि के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी प्रयासों एवं सुविधाओं का भी प्रायः अभाव है। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक बैंकों एवं सहकारी समितियों की ग्रामों के विकास में अत्यन्त सीमित भूमिका है। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार एवं गरीबी उन्मूलन हेतु विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के बावजूद ग्रामों में न तो बेरोजगारी दूर हुई है और न ही गरीबी का उन्मूलन हो पाया है।

इस पुस्तक द्वारा एटा जनपद के ग्रामीण जनमानस की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों में हुए परिवर्तन तथा उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं को जानने व समझने का प्रयास किया गया है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य का यह एटा जनपद दो जनपदों एटा एवं कांशीराम नगर में विभाजित हो चुका है। 15 अप्रैल, 2008ई. को जनपद एटा को विभाजित कर कांशीराम नगर जनपद बताया गया। इस जनपद में कासगंज, पटियाली एवं सहावर तहसीलें सम्मिलित की गई हैं। सन् 2000-01ई. में एटा जनपद में कुल 5 तहसीलें एवं 15 विकास खण्ड थे। तहसील एटा के अन्तर्गत निधौली कलाँ, मारहरा, शीतलपुर एवं सकीट विकास खण्ड, तहसील अलीगंज के अन्तर्गत जैथरा एवं अलीगंज विकास खण्ड, तहसील पटियाली के अन्तर्गत सिढ़पुरा, पटियाली एवं गंजडुंडवारा विकास खण्ड, तहसील कासगंज के अन्तर्गत सहावर, अमांपुर, कासगंज एवं सोरों विकास खण्ड तथा तहसील जलेसर के अन्तर्गत अवागढ़ एवं जलेसर विकास खण्ड सम्मिलित थे। सन् 1951ई. की जनगणना के अनुसार जनपद एटा में कुल 1528 ग्राम थे तथा सन् 2000-01ई. में जनपद में कुल 1610 ग्राम थे, जिनमें से 1507 ग्राम आबाद एवं 103 गैर-आबाद ग्राम थे। जनपद के ग्रामों एवं वहाँ निवास करने वाली जनता के शैक्षिक एवं आर्थिक विकास की थाह लेने के लिए जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड से कुल 2 ग्रामों तथा

प्रत्येक चयनित ग्राम से 20-20 प्रतिनिधि नमूनों के साथ समस्त जनपद में कुल 30 ग्रामों एवं 600 सर्वेक्षितों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इस सर्वेक्षण द्वारा सन् 1952ई. एवं सन् 2000ई. के मध्य ग्रामों के विकास में शिक्षा, कृषि, ग्रामीण उद्योग एवं रोजगार सृजन में शासकीय एवं व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरूप आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार इस पुस्तक में समस्त पाँच अध्यायों के अन्तर्गत जनपद एटा के ग्रामों के शैक्षिक एवं आर्थिक विकास की स्थिति, उपलब्धियों तथा समस्या एवं उसके समाधान के सम्बन्ध में विचार किया गया है।

प्रथम अध्याय में जनपद एटा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा की गई है। इस अध्याय के तीन उपखंडों में भौगोलिक दशा, जनसंख्या एवं जलवायु तथा आदर्श स्थलों की विशेष रूप से चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय में जनपद के ग्रामों में शिक्षा की स्थिति से परिचित कराया गया है, जो परिवर्तन और विकास का अत्यन्त प्रभावशाली साधन है। इसमें बताया गया है कि अभी-भी जनपद के ग्रामों में अत्यधिक निरक्षरता, शैक्षिक संस्थाओं के मात्रात्मक एवं गुणात्मक स्तर में कमी तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किए जा रहे प्रयासों के क्या परिणाम रहे।

तृतीय अध्याय का विषय कृषि दशा है। इसे पुनः तीन उपखंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम उपखंड में जनपद की भूमि को उर्वरता के दृष्टिकोण से परखा गया है। द्वितीय उपखंड में जनपद में सिंचाई व्यवस्था की व्यापकता का परीक्षण तथा इस दिशा में किये गये एवं किये जा रहे सरकारी प्रयासों का भी अध्ययन किया गया है। इसी उपखंड में जनपद में कृषि यंत्रीकरण के स्तर तथा कृषकों द्वारा अपनाए गए कृषि यंत्रों एवं उपकरणों के आधार पर उनकी आर्थिक स्थिति को भी जाँचा गया है। अन्तिम उपखंड जनपद में फसलों के प्रकार, उत्पादन एवं समस्याओं को दर्शाता है।

चतुर्थ अध्याय में कृषि क्षेत्र के विकास में कृषि वित्त अथवा कृषि ऋण के महत्व पर विचार किया गया है। यहाँ के ग्रामों में ऋणों के वितरण में संस्थागत स्रोतों यथा- बैंकों एवं सहकारी समितियों की बढ़ती हुई महत्वपूर्ण भूमिका एवं उनके प्रसार तथा ग्रामों में ऋणों के गैर-संस्थागत स्रोतों की चर्चा की गई है। इस अध्याय में कृषि भूमि पर लगाए जाने वाले भू-राजस्व कर (लगान) की प्राचीनता एवं उसकी मौजूदा स्थिति पर भी विचार किया गया है।

SAMPLE

पंचम् अध्याय ग्रामीण औद्योगिक दशा एवं गरीबी उन्मूलन से सम्बन्धित है। ग्रामों में गरीबी एवं बेरोजगारी की समस्या व्याप्त है। इस अध्याय में जनपद के ग्रामों में उद्योगों की स्थिति का अध्ययन किया गया है। इसी अध्याय के अन्तर्गत ग्रामों में स्वरोजगार की स्थापना द्वारा गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में किए जा रहे अथवा किए जा चुके शासकीय एवं व्यक्तिगत प्रयासों की भी चर्चा की गयी है। इस अध्याय में यह भी पढ़ेंगे कि ग्रामीण बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन की गम्भीर समस्याओं से निपटने में कहाँ तक सफलता प्राप्त हो सकी है। अन्त में समस्त अध्यायों के आँकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर उपसंहार प्रस्तुत किया गया है। यही पर ग्रामों के विकास में आने वाली प्रमुख समस्याओं के समाधान हेतु कुछ सुझावों पर भी विचार किया गया है।

इस सृजन में जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन निरन्तर पथ का प्रदर्शक बना, ऐसे परमपूज्यनीय पिताजी श्री राजवीर सिंह यादव एवं माताजी श्रीमती शकुन्तला देवी यादव का आजीवन ऋणी रहते हुए यह पुस्तक आपके चरणों में सादर समर्पित है। पिता का जीवन-संघर्ष, उनकी दूरदृष्टि एवं जीवन के प्रति उनका सहयोगी व सकारात्मक दृष्टिकोण तथा माँ का ममतामयी स्नेह व उनका निःस्वार्थ पारिवारिक समर्पण हमेशा मेरे जीवन के प्रेरक और आधार-स्तम्भ रहे हैं। मैं अपनी बहन डॉ. नीतू यादव एवं जीजा जी डॉ. कृपा शंकर यादव, मामा जी श्री रामनिवास यादव, श्री ए. के. सिंह यादव (पूर्व विधायक), श्री राघवेन्द्र सिंह यादव एवं चाचा जी श्री जयवीर सिंह यादव तथा बड़े भाई श्री अमित गौरव यादव (पूर्व विधायक), श्री कौशल किशोर सिंह यादव, श्री बलवीर सिंह यादव एवं श्री संतोष यादव का भी आभारी हूँ जिनका समय-समय पर बहुमूल्य सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है। मामा जी श्री वी. के. सिंह यादव जी के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञता व्यक्त करना अपनी जिम्मेदारी समझता हूँ जिनका निःस्वार्थ प्रेम एवं मार्गदर्शन मुझे कदम-कदम पर प्राप्त हुआ।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शालिनी यादव जो विपरीत परिस्थितियों में भी मेरे साथ निश्चल मन से समर्पित रहकर अपने निःशब्दों से हमेशा नव-सृजन के लिए प्रेरित करती रही हैं। उनका अमूल्य साथ तथा मेरे पुत्र-पुत्री सूर्यांश एवं दिगिशा के प्यार और स्नेह के कारण मेरी यह पुस्तक साकार रूप ले सकी है। आप सभी के अतुलनीय सहयोग के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

अंत में, ईश्वर की असीम अनुकम्पा से ही मैं इस पावन लेखन कार्य को सार्थक रूप प्रदान करने में समर्थ हो पाया हूँ। मैं अपनी पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से इस

पुस्तक परिवार के सभी सदस्यों को कोटि-कोटि आत्मीय आभार प्रकट करता हूँ। मैंने इस पुस्तक लेखन के दौरान अथक प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आपका क्षमा प्रार्थी रहते हुए मुझे सकारात्मक सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा। मैं आशा व्यक्त करता हूँ कि मैं इसी प्रकार अपनी लेखनी व विचारों द्वारा ग्रामीण एवं अभावग्रस्त लोगों की समस्याओं एवं परिस्थितियों को प्रमुखता से प्रकट करता रहूँगा, जिससे ग्रामों की दशा व दिशा में परिणामी सुधार प्राप्त करने के लिए प्रयास किए जा सकें। मैं भविष्य में आप सभी के स्नेह, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए पूर्व की भाँति आंकाक्षी रहूँगा।

डॉ. हितेन्द्र यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
इतिहास विभाग
लाजपत राय महाविद्यालय
(चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
साहिबाबाद, गाजियाबाद
उ. प्र. (भारत)

SAMPLE

SAMPLE

अनुक्रम

प्रस्तावना 6

अध्याय : 1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 15

भौगोलिक दशा 15

जनसंख्या का स्वरूप एवं जलवायु 16

आदर्श स्थल 24

अध्याय : 2 शैक्षिक दशा 26

अध्याय : 3 कृषि 56

भूमि 57

सिंचाई 64

फसलें 85

अध्याय : 4 वित्त एवं भू-राजस्व व्यवस्था 94

अध्याय : 5 ग्रामीण औद्योगिक दशा एवं गरीबी उन्मूलन 124

उपसंहार 153

संदर्भ ग्रन्थ सूची 167

NOT TO BE SAMPLE